VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 10 SEP 2016
SUBMITTED IN 3 HOURS

PHILOSOPHY (TEST CODE : 783)

Name of Candidate	ANITA YADAV		
Medium Hindi/Eng.	HINDI	Registration Number	16663
Center	M N , DELHI	Date	10/09/16

INDEX TABLE

Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1 (a)	12.5	
(b)	12.5	
(c)	12.5	
(d)	12.5	
2 (a)	12.5	
(b)	12.5	
(c)	12.5	
(d)	12.5	
3 (a)	12.5	
(b)	12.5	
(c)	12.5	
(d)	12.5	
4 (a)	20	
(b)	15	
(c)	15	
5 (a)	15	
(b)	20	
(c)	15	

Total Marks Obtained:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are FIVE questions printed in HINDI and ENGLISH.
   इसमें पाँच प्रश्न हैं तथा हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में छपे हैं।
3. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Alignment Competence
2. Context Competence
3. Content Competence
4. Language Competence
5. Introduction Competence
6. Structure - Presentation Competence
7. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. **(a)** What it Vyapti? How is it known? Discuss with special reference of Nyaya System. 12.5

व्याप्ति क्या है? यह किस प्रकार जाना जाता है? न्याय के विशेष संन्दर्भ में चर्चा कीजिए।

यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का एक स्रोत अनुमान को माना जाता है। अनुमान से तात्पर्य पश्चात ज्ञान से है, जो कि व्याप्ति पर आधारित है। व्याप्ति हेतु एवं साध्य के मध्य नियत, साहचर्य अनौपाधिक व अव्यभिचार संबंध है। जैसे धुँए को देखकर आग का ज्ञान प्राप्त करना। जैन, बौद्ध, न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा अद्वैत वेदान्त सभी दर्शन अनुमान को एक प्रमाण के रूप में स्वीकर करते हैं।

धुँए व आग के संबंध में धुँआ हेतु है तथा आग साध्य। इस आधार पर व्याप्ति के दो ~~तीन~~ प्रकार माने जाते हैं। सम व्याप्ति: हेतु व साध्य समान रूप से व्याप्त

विषम व्याप्ति - साध्य विस्तृत व हेतु लघुरूप।

न्याय दर्शन के अनुसार व्याप्ति की स्थापना के लिए कुछ शर्तें आवश्यक हैं। इसके आधार पर ही हेतु व साध्य के मध्य सार्वभौमिक व निश्चित संबंध की स्थापना की जा सकती है -

- अन्वय - हेतु व साध्य के मध्य सकारात्मक संबंध के आधार पर।

व्यतिरेक - हेतु व साध्य के मध्य नकारात्मक संबंध के आधार पर।

अव्यभिचार - हेतु का साध्य से आत्यन्तिक

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

संबंध) जैसे धुँए का आग से जो संबंध है वह जल आदि से नहीं।

उपाधिनिरास — हेतु व साध्य के मध्य संबंध में शर्त रहितता हो। जैसे आग का धुँए के साथ संबंध गीलेपन की शर्त पर आधारित है। परंतु धुँए का आग से संबंध शर्तरहित

तर्क — हेतु व साध्य के संबंध का कोई अपवाद न हो।

इस प्रकार व्याप्ति की स्थापना की जा सकती है। परंतु प्रत्यक्ष को ही एकमात्र प्रमाण मानने के कारण चार्वाक द्वारा व्याप्ति का खण्डन किया गया है। उनके अनुसार व्याप्ति की स्थापना प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, कारण-कार्य संबंध, शर्त रहितता किसी भी आधार पर नहीं की जा सकती।

1. (b) Write a note on arthapatti. 12.5

अर्थापत्ति पर एक टिप्पणी लिखिए।

मीमांसा व अद्वैत वेदान्त के अनुसार अर्थापत्ति यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का स्रोत है। यह दो शब्दों के योग से बना है - अर्थ व आपत्ति जिसका तात्पर्य है कि दो विरोधाभासी तथ्यों के मध्य संगति स्थापित करने के लिए किसी तीसरे तार्किक तथ्य की कल्पना करना।

जैसे मोटा देवदत्त दिन में नहीं खाता। यहाँ देवदत्त के मोटेपन व दिन में नहीं खाने में विरोधाभास को दूर करने के लिए यह अनुमान लगाया जाता है कि वह अवश्य ही रात में खाता होगा।

इस प्रकार यह ज्ञान प्रत्यक्ष से नहीं हो सकता क्योंकि इसमें इन्द्रियसन्निकर्ष

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

नहीं है, व्याप्ति न होने के कारण अनुमान नहीं है। आप्त व्यक्ति का कथन भी नहीं है तथा सादृश्यता के अभाव में यहाँ उपमान का सहारा भी नहीं लिया जा सकता। अत: अर्थापत्ति को स्वतंत्र प्रमाण माना जाता है। जबकि अन्य दर्शन इसे एक स्वतंत्र प्रमाण स्वीकार नहीं करते हैं।

अर्थापत्ति दो प्रकार की होती है - श्रुतार्थापत्ति व दृष्टार्थापत्ति। प्रथम सुने हुए तथ्यों के विरोधाभास को दूर करने के लिए तथा द्वितीय दृष्ट तथ्यों के विरोधाभास को दूर करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है।

मीमांसा दर्शन के अनुसार अर्थापत्ति का प्रयोग दैनिक जीवन में किया जाता है। शंकराचार्य के दर्शन में माया को जानने के स्रोत के रूप में अर्थापत्ति का प्रयोग हुआ है। शंकर के अनुसार ब्रह्म एकमात्र सत्य है और जगत मिथ्या है। ब्रह्म से जगत की उत्पत्ति के विरोधाभास को दूर करने के लिए माया को आवश्यक माना गया है। माया का ज्ञान अर्थापत्ति के माध्यम से होता है। क्योंकि माया का ज्ञान अन्य किसी प्रमाण से संभव नहीं है। माया भावरूप है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. (c) Discuss the Vaisesika theory of causality. 12.5

वैशेषिक के कारणता सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान नहीं होता बल्कि वह सर्वथा एक नवीन उत्पत्ति है। इसे आरंभवाद या असत्कार्यवाद भी कहा जाता है।

कारण कार्य का नियत, पूर्ववर्ती व अन्यथासिद्ध होता है। अर्थात कार्य से पूर्व हमेशा उपादान रूप में विद्यमान रहता है।

प्रत्येक कार्य का केवल एक ही कारण होता है इस प्रकार वैशेषिक बहुकारणता वाद का विरोध करता है।

कारण के प्रकार -

समवायि कारण - उपादान कारण जैसे कपड़े का धागा।

असमवायि कारण - उपादान कारण का सहायक जैसे कपड़े के निर्माण में धागों का संयोग

निमित्त - जो उपादान को कार्य के रूप में परिणत करता है।

समर्थन में तर्क -

यदि कार्य कारण में निहित है तो निमित्त कारण की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए।

- 'कार्य उत्पन्न हुआ' शब्द का प्रयोग निरर्थक।
- कारण व कार्य शब्द के लिए भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
- कारण व कार्य दोनों का प्रयोजन भी भिन्न है। यदि एक ही होता तो घड़े का कार्य मिट्टी से भी संभव।
- यदि कार्य कारण में निहित है तो दिखना चाहिए।
-

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वैशेषिक दर्शन जगत की उत्पत्ति परमाणुओं से मानता है। जिसका निमित्त कारण ईश्वर है। इस कारण न्याय दर्शन असत्कार्यवाद का समर्थन करता है। अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ मानने तथा मोक्ष को अभावात्मक मानने के कारण न्याय-वैशेषिक ने असत्कार्यवाद का समर्थन किया है।

सांख्य, शंकर, रामानुज, योग दर्शन के अनुसार यदि कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान नहीं है तो कार्य की उत्पत्ति संभव ही नहीं है। तथा इस ऐसा मानने से किसी भी कारण से कोई भी कार्य उत्पन्न मानना पड़ेगा जो कि संभव नहीं है।

1. **(d)** Write a note on Madhva's conception of Moksha. 12.5

मध्व के मोक्ष सिद्धांत पर टिप्पणी लिखिए।

मध्व द्वैतवाद का समर्थन करते हैं। मध्व के अनुसार दो प्रकार के तत्व पाए जाते हैं - स्वतंत्र व परतंत्र। स्वतंत्र तत्व एकमात्र ब्रह्म है तथा परतंत्र तत्व चित्त व अचित्त हैं। चित्त व अचित्त प्रकृति है जो कि जीव व जगत का कारण है।

जीव चूँकि ब्रह्म या ईश्वर पर आश्रित है। परंतु जब जीव शरीर युक्त होता है तो मन, शरीर व इंद्रियों से अपने ही अपना वास्तविक रूप समझकर ब्रह्म से स्वतंत्र मानने लगता है। यही बंधन है तथा बंधन की स्थिति में जीव कर्मफल भोगता रहता है। यह अविद्या के कारण होता है।

मोक्ष प्राप्ति के लिए जीव को

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ब्रह्म से अपनी परतंत्रता का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके लिए मध्व भक्तिमार्ग को ही सर्वोत्तम मानते हैं। मध्व के अनुसार बंधन ~~मोक्ष~~ ब्रह्म प्रदत्त है तो मोक्ष भी ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त होगा।

शंकराचार्य ज्ञान मार्ग को मुक्ति का साधन मानते हैं। परन्तु मध्व भक्ति मार्ग के साथ-साथ नैतिक कर्मों को ही मुक्ति का मार्ग मानते हैं।

मोक्ष क्रमिक रूप से प्राप्त होता है तथा मोक्ष की अवस्था में जीव शरीर विहीन हो जाता है। सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य व सायुज्य मुक्ति में मध्व सायुज्य मुक्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान प्रदान करते हैं। मोक्ष की अवस्था भावात्मक है।

मोक्षावस्था में जीव आनन्द युक्त रहता है परंतु ~~यह~~ आनंद की मात्रा में अंतर भारतीय दर्शन में केवल मध्व ही स्वीकार करता है।

मध्व शंकर, बौद्ध के विपरीत सद्यः व विदेह मुक्ति में से केवल विदेह मुक्ति को ही स्वीकार करते हैं क्योंकि शरीर ही बंधन का कारण है अतः सदेह मुक्ति संभव नहीं है। मोक्ष प्राप्तस्य प्राप्ति नहीं बल्कि सर्वथा नवीन वस्तु है।

मध्व जीव व ब्रह्म में भेद मानने के कारण कई तार्किक असंगतियों ~~से~~ से अपने मोक्ष विचार को बचा नहीं पाए।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. (a) Explain the nature of Brahman according to Shankar. How are Brahman and Ishwar different? 12.5

शंकर के ब्रह्म प्रकृति को स्पष्ट कीजिए। ब्रह्म व ईश्वर में विभेद को बताइए।

अद्वैतवादी शंकर के अनुसार पारमार्थिक रूप से केवल ब्रह्म ही सत है। "ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या जीवो: ब्रह्मैव नापर:।" अर्थात जगत मिथ्या है, ब्रह्म सत्य है, जीव ब्रह्म से पृथक नहीं है।

- ब्रह्म अद्वैत है। ब्रह्म के समान अन्य कोई सत्ता नहीं है।
- ब्रह्म प्रातिभासिक व व्यावहारिक सत्ता के अलावा पारमार्थिक स्तर पर एकमात्र सत्ता है।
- ब्रह्म निर्गुण, निर्विशेष, निराकार, निरवयव है। इस कारण ब्रह्म अनिर्वचनीय है जिसे शंकर ने नेति-नेति कहा है। बुद्धि की चारों कोटियों से ब्रह्म का वर्णन संभव नहीं है।
- ब्रह्म सत-चित-आनंद (सच्चिदानंद) है। सत अर्थात असत नहीं है, चित अर्थात अचित नहीं है, आनंद अर्थात दुःखरूप नहीं है।
- ब्रह्म में सजातीय, विजातीय व स्वगत भेद नहीं है।

चूंकि ब्रह्म जगत का निमित्त व उपादान कारण दोनों है अत: शंकर ने माया युक्त ब्रह्म अर्थात ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया है। ईश्वर ही जगत की रचना करता है। ब्रह्म व ईश्वर के दोनों में निम्नलिखित अंतर है -

- ब्रह्म निर्गुण, निराकार, निरवयव व निर्विशेष है जबकि ईश्वर सगुण, साकार व सविशेष है।
- ब्रह्म माया से मुक्त नहीं है जबकि ईश्वर माया युक्त है।
- ब्रह्म पारमार्थिक स्तर का सत है जबकि ईश्वर नहीं।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- सत् चित् आनंद ब्रह्म का स्वरूप गुण है जबकि ईश्वर में तटस्थ गुण पाए जाते हैं।
- ईश्वर जगत का उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता व संहारक है, ब्रह्म ऐसा नहीं करता क्योंकि वह निर्गुण व निराकार है।
- ब्रह्म अनिर्वचनीय है जबकि ईश्वर सगुण होने के कारण वर्णनीय है।
- ईश्वर लीला मात्र के लिए जगत की रचना करता है। वास्तविक रूप से शंकर के ब्रह्म की चार अवस्थाएं हैं – ब्रह्म, ईश्वर, हिरण्यगर्भ व वैश्वानर। इस प्रकार तात्विक रूप में ईश्वर व ब्रह्म एक ही हैं, इनमें मात्र अवस्था का अंतर है। ब्रह्म तक पहुँचने के लिए ईश्वर का वर्णन एक सीढ़ी के रूप में किया गया है।

2. **(b)** What is Svatahapramanyavada according to Mimansa? Is their explanation of were consistent with it? 12.5

मीमांसा के अनुसार स्वतःप्रमाण्यवाद क्या है? क्या यह व्याख्या इससे सुसंगत है?

भारतीय दर्शन में यथार्थ ज्ञान की प्रमाणिकता व अयथार्थज्ञान से भिन्नता का ज्ञान प्रामाण्यवाद के आधार पर किया जाता है।

मीमांसा दर्शन स्वतः प्रामाण्यवाद का समर्थन करता है। इसके अनुसार जिन साधनों से तथा कारणों से ज्ञान की उत्पत्ति होती है उन्हीं से ज्ञान के प्रमाण्य का भी ज्ञान होता है। अर्थात ज्ञान अपनी उत्पत्ति के समय से ही प्रमाणिक होता है।

मीमांसा दर्शन वस्तुवादी दर्शन है। इनके अनुसार ज्ञान जनक सामग्री ही

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ज्ञान में प्रमाणिकता लाती है। इस कारण इन्हें स्वतः प्रमाण्यवाद का समर्थक माना जाता है। जैसे शेर को देखते ही वहाँ से दूर भाग जाना क्योंकि शेर से संबंधित ज्ञान उत्पत्ति के समय से ही प्रमाणिक है। अतः यह स्वतः प्रमाण्यवाद है।

जबकि ज्ञान में अप्रमाण्य कारण सामग्री दोष व अन्य कारण से आता है। जैसे पीलिया रोग से ग्रसित व्यक्ति को सब कुछ पीला दिखाई पड़ना यहाँ कारण सामग्री में ही दोष है अतः अप्रमाण्य परतः है।

चूँकि मीमांसक वस्तुवादी दार्शनिक हैं। अतः स्वतः प्रमाण्यवाद व परतः अप्रमाण्यवाद की तार्किक व्याख्या ~~संभव नहीं~~ नहीं कर पाते। यदि स्वतः प्रमाण्यवाद मान लिया जाए तो भ्रम व संशय की व्याख्या करना संभव नहीं है तथा न ही वैज्ञानिक अनुसंधान संभव है। भ्रम ज्ञान को भी वास्तविक मानना पड़ेगा। इसी कारण न्याय-वैशेषिक बौद्ध दर्शन द्वारा इसकी आलोचना की जाती है।

परंतु दैनिक जीवन में हम स्वतः प्रमाण्यवाद के आधार पर ही व्यवहार करते हैं ~~बल्कि~~ न कि न्याय दर्शन के सफल-प्रवृत्ति सामर्थ्य के आधार पर।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. (c) How are evolution and involution related in Sri Aurobindo's philosophy? 12.5

श्री अरविन्द के दर्शन में विकास व प्रतिविकास किस प्रकार से संबंधित है?

अरविन्द जगत के विकास की व्याख्या विकास व प्रतिविकास के आधार पर करते हैं। इसे उन्होंने आरोहण व अवरोहण कहा है। अरविंद के अनुसार मानव का उद्देश्य दिव्य जीवन की प्राप्ति है। इसके लिए जगत का विकास दो चरणों में होता है –
① अवरोहण तथा आरोहण।
अवरोहण में परम सत की जगत के निम्नतर रूपों में अभिव्यक्ति होती है, जिसे उन्होंने परम सत की अज्ञान में डुबकी (प्लंज) कहा है। यहाँ अज्ञान से तात्पर्य आंशिक ज्ञान से है।
अरविन्दो परम सत्त की अभिव्यक्ति जड़ व चेतन सभी में मानते हैं, इसमें परमसत लीलावश स्वयं को निम्नतर रूपों में अभिव्यक्त करता है। यह कार्य वह माया की सृजनात्मक शक्ति से करता है। इसमें सत, चित, आनंद, अतिमानस, मानस, मन, प्राण व जड़ में परम सत की अभिव्यक्ति होती है। यह सृष्टि का प्रथम चरण है।
आरोहण – सृष्टि का द्वितीय चरण है। इसमें जगत निम्नतर गोलार्द्ध से उच्चतर गोलार्द्ध में प्रवेश करने को प्रयासरत है। जड़, प्राण, मन मानस (निम्नतर गोलार्द्ध), अतिमानस, आनंद, चित व सत (उच्चतर गोलार्द्ध) है। आरोहण निम्नतर गोलार्द्ध से उच्चतर गोलार्द्ध में पहुंचने की प्रक्रिया है। इससे पूर्ण विकास होता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विकास व प्रतिविकास एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। क्योंकि बिना अवरोहण के आरोहण संभव नहीं है। जब तक परम सत्व निम्नतर रूपों में व्यक्त नहीं होगा। निम्नतर रूप परम सत्व की ओर गतिशील नहीं हो सकते। यह प्रक्रिया स्वाभाविक है।

तथा बिना आरोहण की प्रक्रिया के विकास की प्रक्रिया संभव नहीं है। विकास चक्रीय व उर्ध्वरेखीय दोनों रूपों में होता है। इसलिए विकास व प्रतिविकास एक दूसरे पर निर्भर हैं। दोनों मिलकर ही जगत के विकास की प्रक्रिया पूर्ण कर पाते हैं।

2. **(d)** Evaluate Ramanuja's arguments against Shankar theory of Maya. 12.5

शंकर के माया सिद्धांत के विपक्ष में रामानुजाचार्य के तर्कों का परीक्षण कीजिए।

अद्वैतवेदान्ती शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म माया से युक्त होकर जगत की रचना करता है। ब्रह्म के इस रूप को ईश्वर कहा जाता है। माया ईश्वर की शक्ति है यह अनादि है। परंतु सांत है।

रामानुज शंकर के माया विचार के खण्डन के लिए सात तर्क देते हैं जिसे सप्तानुपपत्ति कहा जाता है —

1. आश्रयानुपपत्ति — रामानुज के अनुसार माया का आश्रय क्या है। स्वप्रकाश्य ब्रह्म को इसका आश्रय नहीं माना जा सकता है। जीव को भी नहीं क्योंकि जीव तो स्वयं इसका परिणाम है।

शंकर का मानना है कि स्वयं ब्रह्म ही माया का आश्रय है। जिस प्रकार सूर्य को

बादल ढक लेते है उसी प्रकार माया ब्रह्म पर आवरण व विक्षेप कर देती है।

2. तिरोधान — ब्रह्म चैतन्य रूप है अतः माया उसे फिर ढक नही सकती।
शंकर के अनुसार बादल द्वारा सूर्य को ढंकने के समान ही माया ब्रह्म को ढंक देती है। परंतु वह उससे प्रभावित नहीं होता।

3. स्वरूपानुपपत्ति — रामानुज के अनुसार माया का स्वरूप स्पष्ट नही है। वह सत व असत नही है।
शंकर के अनुसार माया भाव रूप है अर्थात सत व असत से परे।

4. अनिर्वचनीयानुपपत्ति — रामानुज के अनुसार अनिर्वचनीय स्वयं एक कोटि है अतः माया बुद्धि की कोटियो से परे नही है।
शंकर के अनुसार माया बुद्धि की कोटियो से परे है अतः अनिर्वचनीय है। यह एक नई कोटि नही हो सकती है।

5. प्रमाणानुपपत्ति — माया किस प्रमाण द्वारा जानी जा सकती है। शंकर के अनुसार इसे अर्थापत्ति प्रमाण से जाना जा सकता है।

6. निवर्तकानुपपत्ति — माया का निवर्तक कौन है? शंकर ब्रह्मज्ञान को माया का निवर्तक मानते है।

7. निवृत्यानुपपत्ति — रामानुज के अनुसार माया की निवृति संभव नही है। परंतु शंकर का मानना है कि ब्रह्म ही एकमात्र सत है, का ज्ञान होते ही माया की निवृत्ति संभव है।
इस प्रकार स्पष्ट है कि शंकर के माया विचार का रामानुज पूर्णतया खण्डन नही कर पाते है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. **(a)** Describe the steps of descent and ascent according to Shri Aurobindo. 12.5

श्री अरविन्द के आरोहण व प्रतिरोहण के पदों की क्रम से व्याख्या कीजिए।

श्री अरविन्द का दर्शन वेदान्त पर आधारित है परंतु उन्होंने जगत को मिथ्या नहीं माना है। इस कारण उन्होंने जगत की उत्पत्ति दो चरणों में स्वीकार की है -

- परम सत द्वारा स्वयं को निम्नतर रूपों में व्यक्त करना (अवरोहण / प्रतिरोहण)
- निम्नतर रूपों का उच्चतर रूपों की ओर प्रस्थान (आरोहण)

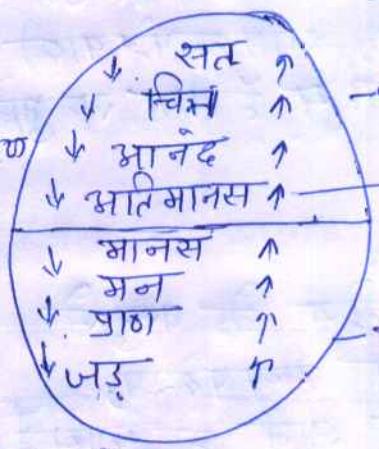

अरविन्द के अनुसार लीला करने के लिए परम सत स्वयं को निम्नतर रूपों में अभिव्यक्त करता है। यह माया की सृजनात्मक शक्ति के द्वारा संभव है। सत से चित, चित से आनंद, आनंद से अतिमानस, अतिमानस से मानस, मानस से मन, मन से प्राण, प्राण से जड़ रूप में अवरोहण होता है। यह परम सत का अज्ञान क्षेत्र में प्रवेश है, इसे <u>अवरोहण</u> कहा जाता है। यह प्रथम स्तर है।

द्वितीय स्तर में निम्नतर जगत सदा परम सत की ओर जाने के लिए प्रयासरत

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

रहता है। इसमें निम्नतर गोलार्द्ध से उच्चतर गोलार्द्ध की ओर गमन किया जाता है। यह स्वाभाविक प्रक्रिया है तथा इसमें जड़ व चेतन सभी का प्रवेश एक साथ उच्चतर गोलार्द्ध में होगा। अभी तक मानस तक विकास हो चुका है तथा अतिमानस में प्रवेश हो रहा है। इस प्रक्रिया को तीव्र ~~अद्वैत~~ पूर्ण योग के द्वारा किया जा सकता है। अतिमानस में प्रवेश करते ही सच्चिदानंद की प्राप्ति होगी यही विकास का अंतिम चरण है। इसमें सभी की मुक्ति होगी। यह दिव्य जीवन की प्राप्ति है। इसप्रकार अरविन्द का विकास प्रयोजन के साथ ही यंत्रवादी व चक्रीय के साथ ही उर्ध्वरेखीय है तथा सर्वमुक्ति से संबंधित है।

3. (b) Write a note on Alaukika Pratyaksha. 12.5

अलौकिक प्रत्यक्ष–टिप्पणी।

न्याय दर्शन के अनुसार इन्द्रिय के वस्तु से सन्निकर्ष से उत्पन्न होने वाला अव्यपदेश्य, अव्यवसायात्मक व अव्याभिचारी ज्ञान ही प्रत्यक्ष है।
नव्य नैयायिक ऐसे ज्ञान को प्रत्यक्ष मानते हैं जो किसी अन्य पर निर्भर नहीं।
नैयायिक दो प्रकार के प्रत्यक्ष को स्वीकार करते हैं — लौकिक व अलौकिक प्रत्यक्ष।

अलौकिक प्रत्यक्ष — जब इन्द्रियों का वस्तु से असाधारण रीति से प्रत्यक्ष होता है उसे अलौकिक प्रत्यक्ष कहते हैं। प्रत्यक्ष प्रमा व प्रमाण दोनों है।

अलौकिक प्रत्यक्ष तीन प्रकार का होता है —

(1) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष — जब प्रत्यक्ष के समय

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वस्तु के सामान्य का भी ज्ञान हो जाता है तो इसे सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष कहते हैं। जैसे गाय का प्रत्यक्ष करने पर गोत्व का ज्ञान नैयायिक वस्तुवादी हैं अतः सामान्य की स्वतंत्र सत्ता स्वीकार करते हैं।

② ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष — जब एक इन्द्रिय से प्राप्त होने वाला ज्ञान किसी दूसरी इन्द्रिय के माध्यम से प्राप्त होने लगे तो उसे ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष कहते हैं। जैसे बर्फ को देखकर ठंड का अहसास।

ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष के आधार पर नैयायिक भ्रम/ख्याति की व्याख्या करते हैं। इसे उन्होंने अन्यथा ख्यातिवाद कहा है।

③ योगज प्रत्यक्ष - यह प्रत्यक्ष बिना इन्द्रिय-वस्तु सन्निकर्ष के प्राप्त होता है। यह प्रत्यक्ष भूत, भविष्य का ज्ञान भी वर्तमान में प्रदान करता है। यह सभी मनुष्यों को नहीं होता।

इस प्रकार अलौकिक प्रत्यक्ष लौकिक प्रत्यक्ष से भिन्न है। बौद्ध दर्शन अपोह वाद के आधार पर सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष की आलोचना करते हैं। तथा ज्ञानलक्षण प्रत्यक्ष के आधार पर भ्रम की व्याख्या करने पर नैयायिकों के वस्तुवाद की रक्षा करना संभव नहीं है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. (c) Evaluate Shankara's conception of Moksha. 12.5

शंकर के मोक्ष सिद्धांत का परीक्षण कीजिए।

"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापर:" के आधार पर शंकर का मानना है कि जीव व ब्रह्म एक ही है। परंतु अविद्या के कारण जीव अपने आप को ब्रह्म से पृथक समझ लेता है तथा बंधन में पड़ जाता है।

मोक्ष प्राप्ति के लिए जीव को ब्रह्म से अपने तादात्म्य का ज्ञान होना आवश्यक है इसके लिए शंकर ज्ञान मार्ग को मोक्ष का प्रमुख साधन मानते हैं।

मोक्ष प्राप्ति की प्रक्रिया —

मोक्ष प्राप्ति से पूर्व मुमुक्षु में चार गुण होना आवश्यक है —

(क) सुख दुख में भेद करने, सत् असत् में भेद करने की क्षमता।

(ख) सांसारिकता में आसक्ति का अभाव

(ग) सम, दम, उपरति, तितिक्षा का होना अर्थात् सहिष्णुता

(घ) मुमुक्षुत्व - मोक्ष प्राप्ति की तीव्र इच्छा।

इसके पश्चात साधक गुरु के पास जाता है तो उसे ब्रह्म से एकाकार का ज्ञान प्रदान करता है इसके लिए साधक श्रवण, मनन व निदिध्यासन करता है तथा निरंतर ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करता है। गुरु उसे 'तत् त्वमसि' 'प्रज्ञानं ब्रह्म' जैसे वाक्यों द्वारा ब्रह्म से तादात्म्य का ज्ञान प्रदान करता है तथा अंत में 'अयमात्मा ब्रह्म' के द्वारा उसे 'अहम् ब्रह्मास्मि' का ज्ञान होता है।

जब उसे ब्रह्म से तादात्म्य का ज्ञान हो जाता है, तो उसे मोक्ष प्राप्त हो

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जाता है। ब्रह्म अपरोक्ष अनुभूतिगम्य है। इसप्रकार स्पष्ट है कि मोक्ष कोई नवीन वस्तु नहीं बल्कि प्राप्तस्य प्राप्ति है। शंकर सदेह व विदेह दोनों मुक्ति को स्वीकार करते हैं।

आलोचना - शंकर केवल ज्ञानमार्ग का समर्थन करते हैं जो कि जन साधारण के लिए भाग्य नहीं है।

- रामानुज के अनुसार निर्गुण, निराकार ~~विज्ञान~~ का विषय नहीं हो सकता।

- शरीर ही बंधन का कारण मानने वाले रामानुज व मध्व इसे स्वीकार नहीं करते। क्योंकि सदेह मुक्ति संभव नहीं है (व्यक्ति फिर से बंधन में पड़ सकता है।

3. (d) Explain various Pramanas according to Mimansa. 12.5

मीमांसा दर्शन के अनुसार विभिन्न प्रमाण के स्रोतों की व्याख्या कीजिए।

मीमांसा दर्शन में प्रभाकर के अनुसार प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान व अर्थापत्ति को तथा कुमारिल भट्ट के अनुसार इन पांच के साथ ही अनुपलब्धि को ~~को~~ भी प्रमाण माना गया है।

प्रत्यक्ष - नैयायिकों के समान ही इन्द्रियसन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष है। परंतु सन्निकर्ष छः के बजाय सिर्फ तीन प्रकार से ही माना। साथ ही सविकल्पक व निर्विकल्पक दोनों प्रत्यक्ष से ज्ञान माना जबकि नैयायिक सिर्फ सविकल्पक मानते हैं।

अनुमान — व्याप्ति पर आधारित ज्ञान अनुमान है। परंतु मीमांसक परार्थानुमान में भी स्वार्थानुमान की भांति तीन ही पद मानते हैं।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

शब्द – आप्त व्यक्ति व वेदों के आधार पर पौरुषेय व अपौरुषेय दो प्रकार का ज्ञान मानते हैं। वेद अपौरुषेय हैं तथा यथार्थ ज्ञान प्रदान करते हैं। शब्दों में अर्थ नित्य होता है। वाक्य दो प्रकार के होते हैं सिद्धार्थ व विधायक।

उपमान – ~~सादृश्य~~ सादृश्यता का ज्ञान उपमान है। मीमांसा न्याय दर्शन की तरह उपमान के लिए आप्त व्यक्ति का कथन आवश्यक नहीं मानता। इसके अनुसार उपमान स्वतंत्र प्रमाण है जो दो वस्तुओं की समानता का ज्ञान प्रदान करता है।

अर्थापत्ति – दो विरोधाभासी तथ्यों के मध्य असंगति को दूर करने के लिए किसी तीसरे तार्किक तथ्य की कल्पना करना अर्थापत्ति कहलाता है। यह स्वतंत्र प्रमाण है क्योंकि इससे मिलने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष, उपमान, शब्द व अनुमान से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसे केवल प्रभाकर ही मानता है।

अनुपलब्धि – अभाव का ज्ञान इससे होता है। कुमारिल भट्ट के अनुसार अभाव का ज्ञान किसी अन्य प्रमाण से नहीं होता क्योंकि इसमें इन्द्रिय सन्निकर्ष नहीं होता जबकि प्रभाकर इसे प्रत्यक्ष में ही शामिल करता है।

प्रभाकर त्रिपुटी प्रत्यक्षवाद के आधार पर ज्ञान को मानता है। ज्ञान, ज्ञाता, ज्ञेय व स्वयं को प्रकाशित करता है जबकि कुमारिल ज्ञातावाद का समर्थन करता है। इसके अनुसार ज्ञातता के आधार पर ज्ञान का अनुमान लगाया जाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. (a) Explain and evaluate the view of Shankara that the Brahman must be free from all the differences (Bheda). 20

शंकराचार्य का ब्रह्म सभी विभेदों से परे हैं। इसकी व्याख्या कर इसका परीक्षण कीजिए।

शंकराचार्य अद्वैतवाद के आधार पर मानते हैं कि पारमार्थिक रूप से केवल ब्रह्म ही सत है। बाकी सब कुछ असत है।

शंकर के अनुसार सत वही है जो त्रिकाला बाधित है। अर्थात जिसका किसी भी काल में बाध न हो। इस रूप में केवल ब्रह्म सत है। ब्रह्म ~~निर्गुण~~ निर्गुण, निराकार, निर्विशेष है। ब्रह्म का वर्णन बुद्धि की कोटियों से संभव नहीं है इस कारण वह अनिर्वचनीय है।

ब्रह्म सभी प्रकार के भेदों से परे है। भेद तीन प्रकार के माने जाते हैं — सजातीय ~~स्वगत~~ विजातीय व ~~स~~ स्वगत।

- ब्रह्म में सजातीय भेद नहीं है। क्योंकि ब्रह्म के समान कोई अन्य सत्ता नहीं है। ब्रह्म एकमात्र सत है। इसी कारण शंकर अपने दर्शन को अद्वैतवाद कहते हैं। क्योंकि संख्या एक सापेक्ष है। ब्रह्म व जीव एक ही हैं। इनमें तात्विक रूप से कोई भेद नहीं है। ~~ब्रह्म में शंकर ने ब्रह्म समान~~
- शंकर ने मध्व के समान चित्त व अचित्त की सत्ता न मानकर कोई विजातीय भेद भी स्वीकार नहीं किया। शंकर के

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अनुसार ब्रह्म के अलावा उससे भिन्न भी किसी अन्य की सत्ता नहीं है। जगत भी केवल व्यावहारिक सत है। ब्रह्म ही जगत के रूप में केवल मिथ्या परिणति होती है न कि वास्तविक। इस कारण इसमें विजातीय भेद भी नहीं है।

स्वगत भेद – शंकर के अनुसार ब्रह्म निर्गुण, निराकार है इसमें कोई स्वगत भेद भी नहीं है। जिस प्रकार कि रामानुज में है। रामानुज ब्रह्म को चित् व अचित् नामक विशेषणों से युक्त मानता है। शंकर के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्ता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ब्रह्म में किसी भी प्रकार का भेद नहीं है। यहाँ तक कि ईश्वर व ब्रह्म भी एक ही है। इनमें अवस्था मात्र का अंतर है। जब ब्रह्म माया से युक्त हो जाता है तो ईश्वर बन जाता है। जगत की रचना के दृष्टिकोण से शंकर ने ईश्वर को स्वीकार किया है। इनमें तत्वतः कोई भेद नहीं है। मायायुक्त ब्रह्म ही ईश्वर है। सगुण ब्रह्म ईश्वर है। इनमें कोई भेद नहीं है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परंतु रामानुज व मध्व इसकी आलोचना करते हैं। उनके अनुसार शंकर का ब्रह्म मानने पर

- जगत में वैविध्य की स्थापना ~~नहीं~~ की व्याख्या नहीं की जा सकती।
- ऐसा ब्रह्म उपासना का विषय नहीं हो सकता।
- न ही निराकार ब्रह्म का ज्ञान उपलब्ध हो सकता।
- ब्रह्म में स्वगत भेद न माना जाए तो जीव व जगत की व्याख्या नहीं की जा सकती
- मध्व के अनुसार विजातीय भेद नहीं मानने से जीव व जगत की उत्पत्ति की व्याख्या नहीं की जा सकती।
- ऐसा ब्रह्म धार्मिक, तत्व मीमांसीय, ज्ञान-मीमांसीय, नैतिक किसी भी दृष्टिकोण से सुसंगत नहीं है।

वस्तुतः शंकर के ब्रह्म की ये आलोचनाएँ केवल व्यावहारिक आधार पर की जा सकती हैं। पारमार्थिक आधार पर नहीं।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. **(b)** Discuss the view of Mimansa and Nyaya on the theory of Pramanyavada. Which one of them do you find adequate give reason for your answer. 15

प्रामाण्यवाद के सिद्धांत पर मीमांसा व न्याय दर्शन के दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए। इनमें से कौन सा सिद्धांत आपको तर्कसंगत प्रतीत होता है, कारण दीजिए।

प्रमाण्यवाद के दो घटक है –

(क) प्राप्त ज्ञान यथार्थ ज्ञान है या नहीं (प्रमाणिक)

(ख) यह ज्ञान यथार्थ ज्ञान से पृथक कैसे है।

प्रमाण्यवाद दो प्रकार का हो सकता है – स्वतः प्रमाण्यवाद व परतः प्रमाण्यवाद

जब ज्ञान की प्रमाणिकता ज्ञानजन्य सामग्री से उत्पन्न हो तो उसे स्वतः प्रमाण्यवाद कहते है तथा ज्ञान की प्रमाणिकता ज्ञानजन्य सामग्री से भिन्न स्रोत से प्राप्त हो तो उसे परतः प्रमाण्यवाद कहते है। इसका विपरीत स्वतः अप्रमाण्यवाद व परतः अप्रमाण्यवाद कहलाता है।

मीमांसा – मीमांसा दर्शन स्वतः प्रमाण्यवाद एवं परतः अप्रमाण्यवाद को मानता है। मीमांसा के अनुसार ज्ञान अपनी उत्पत्ति के समय से ही प्रमाणिक होता है। ज्ञान को उत्पन्न करने के कारण व सामग्री से ही उसमे प्रमाणिकता आती है।

परंतु मीमांसक परतः अप्रमाण्यवाद के समर्थक है। इनके अनुसार ज्ञान में अप्रमाणिकता कारण सामग्री दोष व अन्य साधन दोष से आती है न कि ज्ञान जन्य सामग्री से। इस कारण इसे परतः अप्रमाण्यवाद माना जाता है। जैसे पीलिया से पीड़ित व्यक्ति को सब कुछ पीला दिखाई पड़ना। यहाँ अप्रमाणिकता कारण सामग्री में दोष के कारण आती है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

नैयायिकों का मानना है कि यदि मीमांसा का मत मान लिया जाए तो फिर भ्रम को भी प्रमाणिक मानना पड़ेगा। इससे वैज्ञानिक विकास भी संभव नहीं होगा। परतः प्रामाण्यवाद के कारण तो किसी भी ज्ञान को प्रमाणिक मानना कठिन हो जाएगा।

न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाण्य व अप्रमाण्य दोनों ही परतः होते हैं। ज्ञान उत्पत्ति के समय तटस्थ होता है। यदि ज्ञान में सफल प्रवृत्ति सामर्थ्य होगा तो वह प्रमाणिक ज्ञान होगा अन्यथा अप्रमाणिक। इसप्रकार स्पष्ट है कि प्रमाणिकता व अप्रमाणिकता दोनों ज्ञानजन्य सामग्री से भिन्न साधन से आती हैं। जैसे घड़े का ज्ञान सही होगा यदि वह जल धारण करने में समर्थ है अन्यथा अप्रमाणिक।

मीमांसा के अनुसार यदि ऐसा मानेंगे तो दैनिक जीवन कठिन हो जाएगा। क्योंकि शेर को देखकर सफल प्रवृत्ति सामर्थ्य का इंतजार नहीं किया जा सकता। इससे स्वप्न का ज्ञान भी सही मानना पड़ेगा।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दैनिक जीवन के व्यवहार में मीमांसकों का मत उचित जान पड़ता है क्योंकि नैयायिकों का मत मानकर जीवन कठिन हो जाएगा तथा हमेशा संशय का भाव बना रहेगा।

जबकि नैयायिकों के मत को मानने से वैज्ञानिक अनुसंधान संभव है। इसके आधार पर ही प्रयोग व परीक्षण किया जाना संभव है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. (c) Write note on Padartha. 15

पदार्थ –टिप्पणी।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार पदार्थ की विवेचना की गई है।

पदार्थ वह है जिसे जाना जा सके, ~~किया~~ (ज्ञेय) जिसका अस्तित्व हो तथा जिसे नाम दिया जा सके।

इस रूप में दो प्रकार के पदार्थ माने जा सकते हैं - भावात्मक व अभावात्मक

भावात्मक पदार्थ छः है - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय।

अभावात्मक - अभाव।

द्रव्य - द्रव्य वह है जो गुण व कर्म का आश्रयदाता है तथा ~~गुण व कर्म का आश्रय~~ जगत का उपादान (समवायि कारण है) द्रव्य नौ प्रकार के हैं - पृथ्वी, अग्नि, आकाश, वायु, जल, दिक, काल, आत्मा तथा मन। प्रथम पाँच पंच महाभूत हैं तथा दिक सभी को स्थान प्रदान करता है। आत्मा व मन के इन्द्रियों से युक्त होने से ज्ञान प्राप्त होता है।

गुण - गुण द्रव्य का वह व्यापार है जो क्रिया-विहीन है। ये गुण सभी द्रव्यों में पाया जाता है। गुण चौबीस प्रकार के माने गए हैं।

कर्म - कर्म द्रव्य का गतिशील धर्म है यह केवल समीम द्रव्यों में पाया जाता है। दिक काल व आकाश में में नहीं पाया जाता यह स्थान परिवर्तन करता है। कर्म पाँच प्रकार के होते हैं - उत्क्षेपण, अवक्षेपण, प्रसरण,

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

संकुचन व गमन

सामान्य - किसी एक ही जाति या वर्ग की वस्तुओं में पाया जाता है। यह द्रव्य, गुण व कर्म में ही पाया जाता है। सामान्य नित्य है। एकता स्थापित करता है इसकी वस्तुगत सत्ता है।

विशेष - विशेष अनेकानुगत है। यह एक ही वर्ग की वस्तुओं में, पृथकता स्थापित करने के साथ ही दूसरे वर्ग से भी पृथकता स्थापित करता है। यह व्यावर्तक का काम करता है। विशेष नित्य, अनेक है।

समवाय - समवाय अयुतसिद्ध संबंध है। यह संयोग के विपरीत दो वस्तुओं के मध्य आंतरिक, नित्य संबंध है। यदि दोनों को पृथक कर दिया जाए तो एक नष्ट हो जाएगी जैसे - चीनी से मिठास को पृथक करने पर चीनी का नष्ट होना जैसे - गुण व कर्म का द्रव्य से संबंध।

अभाव - वैशेषिक में अभाव को स्वतंत्र पदार्थ माना है क्योंकि यह ज्ञेय है, बताया जा सकता है तथा इसका अस्तित्व है। अभाव दो प्रकार का होता है - संसर्गाभाव (प्रागभाव, ध्वंसाभाव व अन्योन्याभाव) तथा अत्यन्ताभाव।

आलोचना - वैशेषिक के पदार्थों में से कोई भी स्वतंत्र नहीं है। गुण व कर्म द्रव्य पर आधारित है जबकि द्रव्य गुण व कर्म पर।

सामान्य की वस्तु विशेषों से पृथक सत्ता नहीं - विशेष अनित्य वस्तुओं में पाया जाता है अतः यह नित्य नहीं हो सकता।

- अभाव को स्वतंत्र पदार्थ नहीं माना जा सकता।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. (a) Discuss the nature of Brahman and its relation to Maya according to shankara. 15

शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म की प्रकृति का वर्णन कीजिए एवं इसके माया से संबंध पर प्रकाश डालिए।

शंकर के अनुसार पारमार्थिक रूप से केवल ब्रह्म ही सत्य है। इसलिए जगत मिथ्या है तथा जीव व ब्रह्म तत्वतः एक ही हैं। (ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः)

शंकर के अनुसार ब्रह्म, —

- अद्वैत है, अर्थात एकमात्र सत्ता है।
- ब्रह्म में विजातीय, सजातीय व स्वगत भेद नहीं है।
- ब्रह्म सच्चिदानंद है अर्थात व असत नहीं है, अचित नहीं है तथा दुःखपूर्ण नहीं है।
- ब्रह्म निर्गुण, निराकार, निर्विशेष, निरवयव है।
- ब्रह्म जगत का निमित्त व उपादान कारण है।
- ब्रह्म जगत के रूप में मिथ्या रूप से परिवत होता है।
- जीव व ब्रह्म तत्वतः एक ही है।
- ब्रह्म माया से युक्त होकर ईश्वर बनता है तथा जगत का उत्पत्ति कर्ता, पालनकर्ता व संहारकर्ता बनता है।
- ब्रह्म त्रिकाल बाधित सत है।

माया से संबंध :— शंकर जगत की उत्पत्ति, पालन व विनाश के लिए ईश्वर को स्वीकार करते हैं। जब ब्रह्म माया से युक्त हो जाता

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है तो वह ईश्वर कहलाता है (मायोपाधित ब्रह्म ईश्वर) यह सगुण साकार सविशेष होता है।

ब्रह्म स्वयं माया से प्रभावित नहीं होता है जिस प्रकार जादूगर अपनी जादू से प्रभावित नहीं होता।

माया अपनी आरोपण व विक्षेप शक्ति के द्वारा ब्रह्म पर जगत का आरोपण कर देती है। इसे ही अध्यास कहा जाता है।

माया अनादि व सांत है। यह भावरूप है। माया का ज्ञान अर्थापत्ति प्रमाण के द्वारा होता है। तथा माया का अंत ब्रह्म ज्ञान के द्वारा होता है। माया स्वतंत्र नहीं है। यह ब्रह्म पर निर्भर है सांख्य की प्रकृति के विपरीत यह परतंत्र है।

ब्रह्म माया शक्ति का प्रयोग केवल जगत की रचना करने के लिए करता है। माया अविद्या का कारण है। अविद्या से अध्यास होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि माया सगुण ब्रह्म अर्थात ईश्वर की शक्ति है।

रामानुज के द्वारा शंकर के मायावाद का खण्डन सत्कानुपपत्ति के माध्यम से करने का प्रयास किया है परंतु वे इसमें पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाए हैं।

वस्तुतः माया के द्वारा शंकर ने निर्गुण निराकार ब्रह्म द्वारा जगत की रचना में संगति स्थापित करने का प्रयास किया है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. (b) Write a note on kinds of Inferences according to Nyaya Philosophy. 20

न्याय दर्शन के अनुसार अनुमान प्रमाण के भेद पर टिप्पणी लिखिए।

न्याय दर्शन के अनुसार अनुमिति प्रमा की प्राप्ति अनुमान प्रमाण के आधार पर होती है। अनुमान अर्थात पश्चात ज्ञान व्याप्ति पर आधारित होता है। व्याप्ति हेतु व साध्य के मध्य अनिवार्य, अनौपाधिक, शर्तरहित, सार्वभौमिक अव्यभिचार संबंध है। जैसे जहाँ-जहाँ धुंआ होती है, वहाँ-वहाँ आग होती है। इस पर्वत पर धुंआ है अतः इस पर्वत पर आग है।

यहाँ धुँए व आग का संबंध व्याप्ति है। अनुमान के तीन आधारों पर भेद किए जाते हैं—

(क) उद्देश्य के आधार पर (स्वार्थानुमान व परार्थानुमान)

(ख) कारण-कार्य या स्रोत के आधार पर (पूर्ववत, शेषवत व सामान्यतोदृष्ट)

(ग) व्याप्ति की स्थापना के आधार पर (अन्वय, व्यतिरेक, अन्वय व्यतिरेकी)

स्वार्थानुमान — जब स्वं ज्ञानप्राप्ति के लिए अनुमान लगाया जाता है। इसमें तीन स्तर होते हैं। जैसे धुँए के आधार पर आग का ज्ञान प्राप्त करना।

परार्थानुमान - जब अनुमान किसी अन्य को ज्ञान प्रदान करने के लिए लगाया जाता है तो उसे परार्थानुमान कहते हैं। इसके पाँच स्तर हैं इस कारण इसे पंचावयव

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अनुमान भी कहते हैं —

प्रतिज्ञा — पर्वत पर आग है। यह असिद्ध होता

हेतु — क्योंकि पर्वत पर धुँआ है। यह आग का हेतु है।

उदाहरण सहित व्याप्ति वाक्य — इस वाक्य के आधार पर ही अनुमान संभव है। यह सार्वभौम होता है जहाँ-जहाँ धुँआ है वहाँ-वहाँ आग होती है।

उपनय — इस पर्वत पर धुँआ है।

निगमन — अतः इस पर्वत पर आग है।

इस प्रकार किसी अन्य व्यक्ति को अनुमान के आधार पर ज्ञान उत्पन्न किया जा सकता है।

~~प्राचीन~~ यहाँ यह आलोचना भी की जाती है कि हेतु व उपनय व प्रतिज्ञा व निगमन समान ही हैं परंतु यह सही नहीं है क्योंकि उपनय व निगमन सिद्ध हो चुके हैं जबकि प्रतिज्ञा व हेतु असिद्ध है। यह विधि आगमनात्मक व निगमनात्मक का मिश्रण है।

प्राचीन नैयायिकों के अनुसार अनुमान —

पूर्ववत — कारण को देखकर कार्य का अनुमान लगाना जैसे बादलों को देखकर वर्षा का अनुमान लगाना।

शेषवत अनुमान — कार्य को देखकर कारण का अनुमान लगाना जैसे भरे गड्ढों को देखकर रात में वर्षा हुई का अनुमान लगाना।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सामान्यतोदृष्ट :- सामान्य कार्य को देखकर कारण का अनुमान लगाना। जैसे किसी पशु के कटे खुर देखकर उसके सींगों का अनुमान

नव्य नैयायिक व्याप्ति की स्थापना के आधार पर न्याय के तीन भेद स्वीकार करते हैं -

अन्वय अनुमान — हेतु व साध्य के मध्य भावात्मक संबंधों के आधार पर ज्ञान

~~व्याप्ति की स्था~~

व्यतिरेकी — हेतु व साध्य के मध्य नकारात्मक संबंध के आधार पर ज्ञान

अन्वयव्यतिरेकी — अन्वय व व्यतिरेक दोनों के आधार पर अनुमान लगाना। जैसे धुंए व आग के संबंध के आधार पर।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नैयायिकों ने अनुमान की व्यापक विवेचना की है। इसी क्रम में हेतु के दूषित होने पर हेत्वाभास (सव्यभिचार, बाधित, विरुद्ध, असिद्ध/असत्प्रतिपक्षत) का वर्णन किया है तथा सद् हेतु की भी व्याख्या की है (पक्षसत्व, सपक्ष सत्व, विपक्ष असत्व, सत्प्रतिपक्ष सत्व व अबाधित)

चार्वाक दर्शन द्वारा नैयायिकों के अनुमान प्रमाण का खण्डन व्याप्ति के खण्डन के द्वारा किया गया है। उनके अनुसार व्याप्ति की स्थापना प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, कारण-कार्य किसी भी प्रकार से नहीं की जा सकती।

परंतु चार्वाक भी अनुमान का खण्डन करने के पूर्णतः सफल नहीं हो पाए हैं।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. (c) Explain the nature of Brahman according to Ramanuja. How does he differ from Shankara? 15

रामानुज के ब्रह्म को स्पष्ट कीजिए। यह शंकर से किस प्रकार भिन्न है?

विशिष्टाद्वैत वादी रामानुज ब्रह्म को ही ईश्वर मानते हैं। इनके अनुसार ब्रह्म सगुण साकार, सविशेष, सावयव है। रामानुज के अनुसार ब्रह्म शुद्ध सत्व से निर्मित है इस कारण वह बंधन मोह से परे है।

ब्रह्म अद्वैत है, परंतु वह चित व अचित नामक विशेषणों से युक्त है। ये विशेषण उसके अंश मात्र हैं जिनसे क्रमशः जीव व जगत की उत्पत्ति होती है। इस कारण जगत सत है।

ब्रह्म में सजातीय व विजातीय भेद नहीं हैं परंतु स्वगत भेद हैं। फिर भी वह नित्य है क्योंकि परिवर्तन सिर्फ विशेषणों में होता है न कि विशेष्य में।

ब्रह्म जगत का निमित्त व उपादान दोनों कारण है। ब्रह्म उपासना का विषय है।

जगत का कारण है, अतः रामानुज ब्रह्म परिणाम वाद को मानता है।

रामानुज अभेद को महत्व देता है न कि भेद को।

रामानुज व शंकर के ब्रह्म में अंतर —

शंकर के अनुसार केवल ब्रह्म ही सत है जगत मिथ्या है तथा जीव व ब्रह्म एक ही है, जबकि रामानुज जीव व ब्रह्म में अंशी अंश संबंध मानता है।

रामानुज का ब्रह्म सगुण, सविशेष, साकार है शंकर का निर्गुण, निर्विशेष, निराकार है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- रामानुज के अनुसार ब्रह्म व ईश्वर एक ही है, जबकि शंकर दोनों में भेद मानता है। ईश्वर मायायुक्त है।
- रामानुज का ब्रह्म निर्विचतीय है जबकि शंकर का ब्रह्म अनिर्वचनीय है।
- रामानुज ब्रह्म में स्वगत भेद मानता है जबकि शंकर नहीं मानता।
- रामानुज ब्रह्म का जगत के रूप में वास्तविक रूपांतरण मानकर जगत को सत मानता है। जबकि शंकर ब्रह्म का जगत के रूप में विवर्त मानता है।
- शंकर पारमार्थिक स्तर पर एकमात्र सत केवल ब्रह्म ही मानता है जबकि रामानुज ब्रह्म, जीव, जगत सभी को सत मानता है।
- रामानुज ब्रह्म को नित्य मानता है परंतु उसके विशेषणों में परिवर्तन मानता है जबकि शंकर ब्रह्म को विशेषणों से युक्त नहीं मानता, इस कारण नित्य मानता है।
- ~~रामानुज ब्रह्म~~

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शंकराचार्य के ब्रह्म का महत्व जहाँ तार्किक व ज्ञानात्मक दृष्टिकोण से अधिक संतुष्टिप्रदान करने वाला है वहीं रामानुज का ब्रह्म धार्मिक व नैतिक दृष्टिकोण से अधिक सुसंगत है।